

---

Shrinu Sadhaka Tava Jivanapatha PrerakavAnim

शृणु साधक तव जीवनपथ प्रेरकवाणीम्

Document Information

---

Text title : Shrinu Sadhaka Tava Jivana Pathapreraka Vanim

File name : shRRiNusAdhakatavajIvanapathaprerakavANIm.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Latest update : April 22, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

शृणु साधक तव जीवनपथ प्रेरकवाणीम्

---



शृणु साधक तव जीवनपथ प्रेरकवाणीं  
वद शिक्षक जनपाठशसुकरां सुरवाणीम् ।  
पठ छात्रक नवनिर्मित सुपरिष्कृत पाठान्  
लिख नूतनविषयेषु हि बहु संस्कृत लेखान् ॥ १ ॥

मा क्षावय निजशंसनपरदूषणवाक्यं  
ननु गापय कृतिबोधकमतिप्रेरकगीतम् ।  
त्यज लेखक! भयमिक्षितगतिरोधकभावं  
हृदि धारय नवसर्जनबहुलेखनध्येयम् ॥ २ ॥


सहगन्तुक सहवाचकसहवेदकचित्तं  
अभिमन्त्रय किल वैदिक समुपासितत्तवम् ।  
सरलात्मक नियमाहत सुरसंस्कृत भाषां  
कुरु लेखक निजलेखन कृति साधन भूताम् ॥ ३ ॥

पठनेन हि पदसङ्ग्रह मभिवर्धय नित्यं  
मननेन च पदशोधनमवधारय सर्वम् ।  
समकालिकरचनासु तु सुतरां चिनु गद् यं  
लिख संस्कृत मनुवादक नितरां परिशुद्धम् ॥ ४ ॥


धनकामनपद लालसरहितं कुरु कार्यं  
अभिप्रेरण गुणपूजनसहितं कुर्त्तुं काव्यम् ।  
चल सन्ततमनिशं पथि नियतं कुर्त्तुं सेवां  
लिख लेखक पठ पाठक सततं स्मर ध्येयम् ॥ ५ ॥

शृणु साधक तव जीवनपथ प्रेरकवाणीं

---

——  
*Shrinu Sadhaka Tava Jivanapatha PrerakavAnim*

pdf was typeset on April 22, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

